• ESTIMATES COMMITTEE

FIFTY-SIXTH REPORT

SHRI P. VENKATASUBBAIAH (Nandyal) : I beg to present the Fifty-sixth Report of the Estimates Committee regarding action taken by Government on recommendations contained in the Ninety-third Report of the Estimates Committee (Third Lok Sabha) on the Ministry of Home Affairs—Public Services.

12.13 HRS.

STATEMENT BY MEMBER UNDER DIRECTION 115 AND MINISTER'S REPLY THERE TO

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, विदेश मंत्रालय में उपमंत्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह जी ने 7 अगस्त, 1968 को लोक-सभा में श्री रविराय और मेरे प्रश्न के उत्तर में एक गलत और गुमराह करने वाला जवाब दिया। जब श्री रविराय ने उनसे पूछा कि "16 जून, 1968 को 'आबजरवर' में जो लेख निकला और जब भारत सरकार को पता चला कि इस तरह के इल्जाम लगाये गये हैं तो क्या भारत सरकार की ओर से 'आबजरवर' के सम्पादक को उस चीज का खण्डन करने के लिए कोई चिट्ठी भेजी गयी? यदि हां, तो कब भेजी गई और कोई खण्डन छपा या नहीं?" इस प्रश्न के उत्तर में श्री सुरेन्द्रपाल सिंह जी ने कहा कि "इस अखबार में शाया होने के बाद हमारी तरफ से लिखा गया। कब लिखा गया इसकी इत्तिला नहीं है, लेकिन मालूम हुआ कि हमारे वर्जन को छापने के लिए उन्होंने मना कर दिया।"

इसी प्रश्न के ऊपर मैंने निम्नलिखित सवाल पूछा :—"अभी मंत्री महोदय ने कहा कि उन्होंने 'आबजरवर' को लिखा लेकिन उन्होंने छापा नहीं। मुझे मलूम है कि 'आबजरवर' में जो बहुत से आर्टिकिल निकले उनके अलावा भी कई अखबारों में और ब्रिटिश प्रेस में इसके बारे में यह इम्प्रेशन दिया जा रहा है कि नागलैंड में एक तरह से वियतनाम जैसी लड़ाई हो रही है। तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या हमारे हाई कमीशन ने वहां पर किसी प्रकार से इस प्रोपेगन्डा को कन्ट्रडिक्ट किया है? अगर किया है तो किस तरह से किया है?" श्री सुरेन्द्रपाल सिंह जी ने उत्तर दिया 'आबजरवर' के बारे में तो मैं यह अर्ज़ करूं कि इस अखबार ने तो अन्डरग्राउन्ड नागाज को अपना काज बना लिया है और वे उनकी पूरी इमदाद कर रहे है। अब रही वहां के दीगर, अखबारों की बात, तो उनमें कभी कभी ऐसे आर्टिकिल निकलते है जो कि उनके फेवर में होते है और हमारे खिलाफ पड़ते है। लेकिन हमारे हाई कमिश्नर ने हमेशा उनका विरोध किया है और उनको बतलाया है और समझाया है। श्री सुरेन्द्रपाल सिंह जी ने आगे कहा कि जहां तक 'आबजरवर' का सवाल है उन्होंने जो कुछ कहा है वे कभी मानने के लिए तैयार नहीं है। इस अखबार में तो उन्होंने अपना काज बना लिया। हमने जो उनको भेजा था उसको उन्होंने पब्लिश भी नहीं किया"।

इससे यह बात स्पष्ट है कि उप मंत्री महोदय ने स्पष्टतया यह बात कही कि लन्दन स्थित भारतीय हाई कमिश्नर ने 'आबजरवर' में 16 जून, 1968 को छपने वाले लेख का खण्डन किया और उन्होंने उस लेख का खण्डन करते हुए पत्र 'आबजरवर' को भी लिखा, लेकिन 'अबजरवर' ने उसे नहीं छापा। यही बात उन्होंने मेरे प्रश्न के उत्तर में भी दोहराई और कहा कि उस अखबार ने हमारा वर्जन नहीं छापा और आबज़रवर ने तो बाग़ी नागाओं के काज़ को अपना काज़ बना लिया है।

इसके पश्चात् 'आबज़रवर' ने 11 अगस्त, 1968 को एक समाचार छापा जिसका कुछ अंश निम्नलिखित हैं :—

The Indian Government last week launched an attack on the *Observer* during a debate in the Indian Parliament on the troubles in Nagaland. The Deputy External Affairs Mini-